* अध्यापक शिक्षा / शिक्षक शिक्षा

*अर्थ *परिभाषा *उद्देश्य *क्षेत्र*

परिचय :-

" गुरू ब्रह्मा गुरू विष्णु गुरू देवो महेश्वर।।
गुरू सक्षात् परम ब्रहमा, तस्मै श्री गुरुवे नमः "

प्राचीन काल से ही हमारे समाज में गुरू की महत्ता रही है. स्वंय ऋषि मुनियों एवं देवों ने भी गुरू की स्तुती की है। गुरू ही वह माध्यम है जो शिक्षा का कार्य कराता है।

शिक्षण संसार के सबसे सम्मानित व्यवसायों में से है जो न केवल बालक को योग्यता प्रदान करते जिससे उसका सर्वांगिण विकास होता है. तथा समाज के विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

यह शिक्षण प्रक्रिया है, जो व्यक्ति को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाता है तथा सभी प्रकार की समस्याओं का समाधान बताता है।

* अध्यापक शिक्षा का अर्थ :-

शिक्षण हमेशा से एक गतिशील क्रिया रही है। यह व्यक्ति तथा समाज के व्यवहार में परिवर्तन लाने में सहायक है। शिक्षक शिक्षा के अर्थ को विभिन्न शिक्षाशास्त्रीयों द्वारा स्पष्ट किया गया है। कुछ निम्नलिखित है।

⇒ **Clark** महोदय के अनुसार :-

शिक्षण के अंतर्गत वे क्रियाएं शामील होती हैं, जिनका प्रारूपण एवं निष्पादन छात्र के व्यवहार में परिवर्तन उत्पन्न करने के लिए किया जाता है।

⇒ **C.V Good** के अनुसार :- Dictionary Education में शिक्षण को किसी शैक्षिक संस्थान में छात्रों को अनुदेशित करने की क्रिया के रुप में स्वीकार्य किया गया है।

I.A

P.T.O

* परिभाषा :- शिक्षक की महीमा को देखते हुए अनेक शिक्षा विदों ने शिक्षक शिक्षा को परिभाषित किया है।

⇒ रवीन्द्र नाथ टैगोर के अनुसार :-
शिक्षक छात्रों को ज्ञान के उस प्रकाश से अवगत कराता है, जिसके द्वारा उसका सर्वांगिण विकास करता है, अत: स्वंय शिक्षक का भी सर्वांगिण विकास हो चुका होता है।

* अध्यापक शिक्षा/शिक्षक शिक्षा के उद्देश्य :-
शिक्षक शिक्षा के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं।

1. मानव संसाधन के विकास का लक्ष्य
2. अनुभव एवं ज्ञान का दूसरी पिढ़ीयों तक स्थानांतरण
3. बालक में दक्षता एवं कलात्मक पक्ष में विकास
4. मानवीय मूल्यों एवं सांस्कृतिक परम्पराओं का विकास
5. मानव एवं समाज के लिए मार्गदर्शिका के रूप में।
6. समाज में जागरूकता उत्पन्न करना
7. वैज्ञानिक दृष्टिकोण उत्पन्न करने में सहायक
8. गतिशीलता में सहायक

I.A

1. मानव संसाधन के विकास का लक्ष्य :-
पूरे राष्ट्र, समाज और समुदाय के लिए उपयोगी एवं महत्वपूर्ण मानव को मानव संसाधन कहते हैं। मानव संसाधन के विकास से राष्ट्रीय मूल्य एवं लक्ष्यों की प्राप्ति होती है। शिक्षित व्यक्ति उच्च प्रकार की तकनिक से तैयार होते हैं एवं राष्ट्र भक्ति व नैतिकता से ओत-प्रोत

Scanned with CamScanner

I.A

होते है, वे सैन्य दृष्टि से राष्ट्र का सम्मान बढ़ाते है।

2. अनुभव एवं ज्ञान का दूसरी पिढ़ियों तक स्थानांतरण :- अध्यापक का मुख्य कार्य है समाज के अनुभवों एवं ज्ञान को एकत्र करना तथा उसे एक पिढ़ि से दुसरी पिढ़ी मे स्थानांतरण करना जिससे अगली पिढ़ि को परिपक्व ज्ञान प्राप्त हो जाता है।

3. बालक में दक्षता एवं कलात्मक पक्ष में विकास :- अध्यापक शिक्षा द्वारा व्यक्ति न केवल स्वंय में कौशल एवं दक्षता का विकास करता है बल्कि बालकों का दक्षता एवं कौशलपूर्ण विकास कर राष्ट्र को योग्य नागरिक प्रदान करता है।

4. मानवीय मूल्यों एवं सांस्कृतिक परम्पराओं का विकास :- मानवीय मूल्य जो किसी भी देश एवं सीमाओं से ऊपर होते है, एवं समाज के आधार बिंदु होते है। इन मुल्यों को लगातार बनाए रखने का कार्य अध्यापक करते है, जैसे :- माता-पिता, गुरुजनों एवं अपने से बड़े व्यक्ति की इज्जत करना।

5. मानव एवं समाज के लिए मार्गदर्शिका के रुप में :- अध्यापक के रुप में कार्य करने वाला व्यक्ति नैतिक, चारित्रिक एवं वैज्ञानिक दृष्टि से आदर्शवान व्यक्ति होता है। वह समाज को तथा उसके प्रत्येक घटक में इन गुणों को प्रवेश कराकर उसके व्यक्तित्व को निखारता है।

6. समाज में जागरुकता उत्पन्न करना :- ये बात शत प्रतिशत सच है की हम अध्यापक शिक्षा द्वारा कक्षा में एवं सामाजिक शिक्षण द्वारा समाज में उत्तरदायित्वों के प्रति सचेत करने का काम किया जाना चाहिए, जो प्राय: कम है। केवल पाठ्यक्रम को पुरा कराना शिक्षक का कार्य नही है बल्कि अध्यापक शिक्षा द्वारा समाज में जागरुकता करना भी है।

7. वैज्ञानिक दृष्टिकोण उत्पन्न करने में सहायक :- अध्यापक शिक्षा के लिए स्वस्थ संबंधी निदानात्मक विधियों भी अपनाना आवश्यक है, किसी भी घटना के लिए, क्या, क्यों कैसे लगाते हुए वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है।

P.T.O

Scanned with CamScanner

8. **गतिशीलता में सहायक :-** हमारे जीवन का प्रमुख लक्ष्य गति ही है, जो हमेशा गतिशील रहना है, जीवित रहता है और उन्नती करता है, शिक्षक परिवर्तन लाने में विशेष सहायक होते है।

* **अध्यापक शिक्षा का क्षेत्र :-** (विस्तार क्षेत्र)

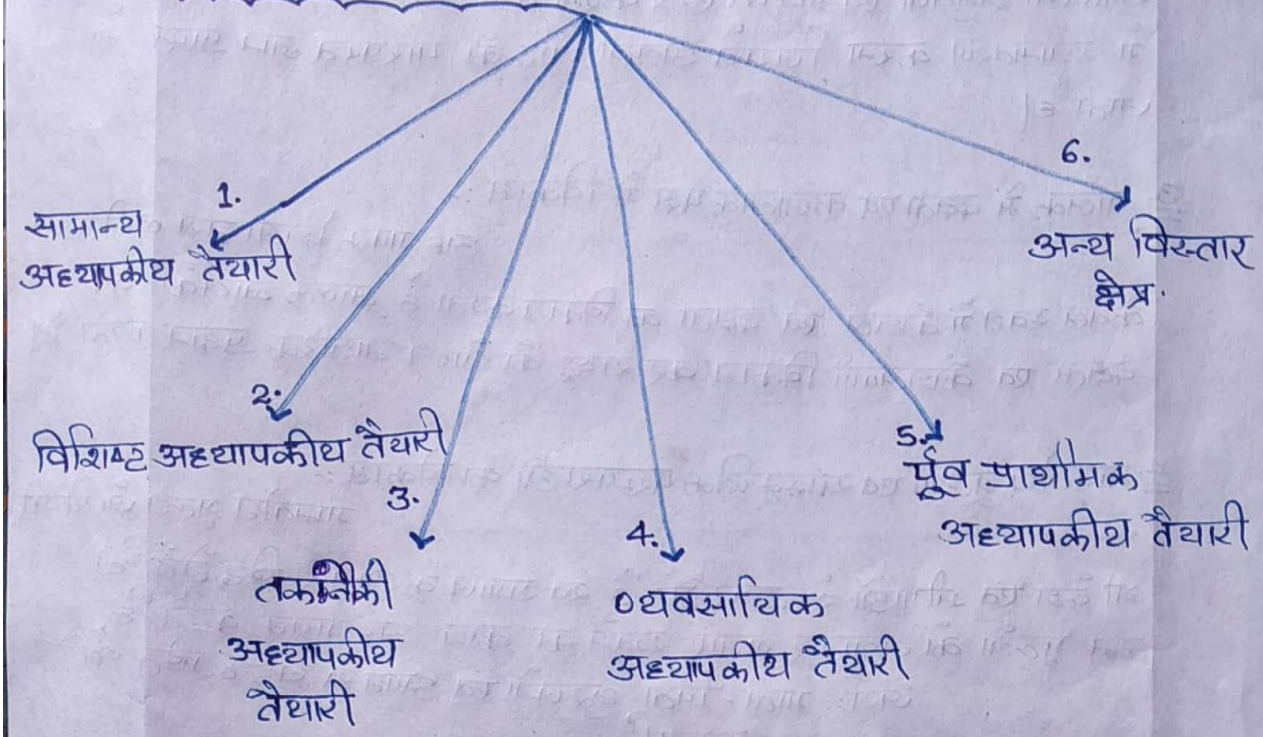

1. **सामान्य अध्यापकीय तैयारी :-** नये - नये संयोजनों के रूप में इस क्षेत्र में पर्यावरण शिक्षा, जनसंख्या शिक्षा, स्वस्थ्य तथा स्वच्छता शिक्षा, मानवाधिकार शिक्षा, शैक्षिक तथा व्यवसायिक मार्गदर्शन, परामर्श संबंधी प्रशिक्षण आदि स्वरूप सामान्य अध्यापकीय तैयारी होती है

2. **विशिष्ट अध्यापकीय तैयारी :-** यह दूसरा महत्वपूर्ण विषय विस्तार क्षेत्र है, क्योंकि आज विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चे को मुख्य धारा से जोड़ने के लिए इस एकीकरण को सफल बना पाना तभी संभव है, जब उपयुक्त विशिष्ट अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम का संचालन हो।

3. **तकनीकी अध्यापकीय तैयारी :-** शिक्षक शिक्षा का क्षेत्र शिक्षकों में ऐसे गुणों का विकास करना है जिसके द्वारा वह शैक्षणिक तकनीक एवं प्रद्योगिकी का प्रयोग कर बालकों के ज्ञान को स्पष्ट एवं विस्तृत रूप से स्थायीत्व प्रदान कर सके।

4. **व्यवसायिक अध्यापकीय तैयारी :-** शिक्षक शिक्षा का उद्देश्य शिक्षकों में ऐसे गुणों का विकास एवं कौशलों का विकास करना है, जिसके द्वारा वह शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर व्यवसायिक कुशलता का परिचय दे सकें।

I.A

Scanned with CamScanner

5. पूर्व प्राथमिक अध्यापकीय तैयारी :- शिक्षक शिक्षा का क्षेत्र शिक्षकों में ऐसे गुणों का विकास करना है, जिसके द्वारा वह शिक्षण से पूर्व की तैयारी को सफलापूर्वक कर सके।

6. अन्य विस्तार क्षेत्र :- शिक्षक शिक्षा का उद्देश्य न केवल शिक्षक में कौशल का निर्माण करना है, बल्कि शैक्षणिक प्रशासन, शैक्षणिक विधि, मूल्यांकन, सामाजिक विकास, नैतिक विकास एवं चारित्रिक विकास आदि क्षेत्रों सफलता पाना है।

निष्कर्ष :- उपरोक्त तत्वों के आधार पर कहा जा सकता है कि शिक्षक शिक्षा एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है, जिसका उद्देश्य राष्ट्र निर्माताओं का निर्माण करना है। व्यापक रूप से व्यक्ति समाज एवं राष्ट्र के विकास में लगातार अपनी सक्रिय भूमिका निभाना है।

शिक्षक ही है जो बालकों का भविष्य निर्धारित करता है, जब शिक्षक हर प्रकार से तैयार होगा तो छात्रों का विकास भी उचित होगा।

Scanned with CamScanner

SHAKUNTALAM INSTITUTE OF TEACHERS EDUCATION

KIRHINDIH, KUMHAU STATION ROAD, SHIVSAGAR

COURSE NAME – B.Ed. **SESSION** – 21-23

SUBJECT - C-5

TOPIC NAME – Teacher Edu. Meaning, Defi. etc

DATE - 04-02-2022

Scanned with CamScanner